मुगल मेवाड़ संधि → 5 फरवरी → 1615

→ मुगलों की अधिनता स्वीकार करने वाला मेवाड़ का पहला शासक → अमरसिंह प्रथम

अमरसिंह प्रथम → झाला हरिदास, शुभकरण → पास भेजा → "खुर्रम" (शाहजहाँ) → (गोगुन्दा)

खुर्रम शाहजहाँ → मुल्लासकुल्लाह, सुन्दरदास → अजमेर गये → जहांगीर

→ संधि प्रस्ताव → शर्तें

→ मुगल-मेवाड़ के मध्य वैवाहिक संबंध नहीं
→ चित्तौड़गढ़ का पुन: निर्माण नहीं करवाना → जहाँगीर ने कहा।
→ मेवाड़ का राणा मुगल दरबार में उपस्थित नहीं होगा
→ मेवाड़ राणा का पुत्र मुगल दरबार में उपस्थित है

→ चावण्ड चित्रकला शैली का स्वर्णकाल अमरसिंह प्रथम काल
→ अमरसिंह प्रथम राजसमंद झील के पास 1620 में मृत्यु
→ ↳ छत्तरी → आहड़ - उदयपुर → मेवाड़ के महाराणाओं में अमरसिंह प्रथम की पहली छतरी मानी जाती है।

आहड़ → मेवाड़ के महाराणाओं की शमशान भूमि है।

कर्ण सिंह :- 1620-1628

→ मुगल दरबार में पेश होने वाला मेवाड़ का पहला राजकुमार कर्ण सिंह था जो भामाशाह के पुत्र जिवाशाह के साथ मुगल दरबार में 1000 मनसब के साथ पेश हुआ

→ कर्णसिंह ने जहांगीर के पुत्र खुर्रम शाहजंहा को 1622 ई में गुजरात अभियान के बाद जगमन्दिर मे शरण दी

→ कर्णसिंह खुर्रम | शाहजहा को पगड़ी बदलकर भाई बनाया था

→ कर्णसिंह जगमन्दिर निर्माण कार्य शुरू करवाया

→ कर्णसिंह ने कर्णविलास, दिलखुशमहल, चन्द्रमहल, रसोड़े का महल जनाना महल का निर्माण करवाया

जगतसिंह I 1628-1652

- जगमन्दिर का निर्माण कार्य पुरा करवाया
- पिछौला झील के किनारे मोहन मन्दिर | रूपसागर तालाब बनवाया
- धाय मा | नाजू बाई का मन्दिर बनवाया
- सपनो से बना मन्दिर जगदीश मन्दिर बनवाया (मुकुन्द | भाणा शिल्पी)
- ✓ जगन्नाथ प्रशस्ति → कृष्ण भट्ट ने उत्कीर्ण की
- कृष्ण भट्ट जगतसिंह प्रथम भैसलाना | भैसड़ा गांव दान दिया
- जगतसिंह प्रथम ने तुलादान भी दिया

→ चित्तौड़ दुर्ग की सर्वप्रथम मरम्मत कार्य जगत सिंह प्रथम ने शुरू

→ खुर्रम शाहजहाँ ने जगत सिंह से नाराज होकर मेवाड़ रियासत से शाहपुरा | प्रतापगढ़ नवीन रियासत बनाई

→ मेवाड़ चित्रकला शैली का स्वर्ण काल → जगत सिंह प्रथम

→ चित्रकारों को विकसित करने के लिए चितेरों री ओवरी, चित्रशाला तस्वीरां रो कारखानो नामक संस्था उदयपुर में बनवायी

चित्रकार : शाहीबद्दीन, कृपाराम, मनोहर

→ राजसिंह → 1652–1680

→ उपनाम : विजय कट कातु
: मेवाड़ का दूसरा महाराणा प्रताप
: मेवाड़ मे जलसंरक्षण को महत्व देने वाला शासक

→ मेवाड़ महाराणा राजसिंह ने राजसमुन्द्र | राजसमन्द झील का निर्माण करवाया।

→ नीव : घेवर माता → बिना पति के सति होने वाली देवी → मन्दिर → राजसमन्द झील

→ उत्तरी किनारा नौ चौकीपाल जाना जाता है।

→ यहा पर संसार का सबसे बड़ा शिलालेख → राजप्रशस्ति शिलालेख है।

राजप्रशस्ति शिलालेख → रणछोड़ भट्ट ने संस्कृत भाषा में लिखा।

↳ 25 शिलाओं पर उत्कीर्ण है।

↳ हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की जीत का उल्लेख

→ औरंगजेब और महाराणा राजसिंह के मध्य आपस में विवाद के कारण →

1 → मेवाड़ महाराणा राज सिंह ने मारवाड़ के राजा अजीत सिंह की सहायता तथा के लवा भागी (?) प्रदान की

2 → जजिया कर महाराणा द्वारा न वसूलना।

↳ गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला कर

3 चित्तौड़ की किलेबंदी करवानी शुरू की

औरंगजेब ने सादुल्ला खां को भेजकर चित्तौड़ मरम्मत कार्य रुकवाया

→ किशनगढ़ की राजकुमारी चारुमती के साथ औरंगजेब विवाह करवाना चाहता था लेकिन महाराणा राजसिंह ने विवाह किया

→ सैनाणी रचना → मेघराज मुकुल

→ शीश काटकर निशानी देने वाली → हाड़ी रानी (सहलकंवर) (पति ↓ रतनसिंह चुण्डावत)

हाड़ी रानी बटालियन → अजमेर

हाड़ी रानी का स्मारक → सलुम्बर (पहले उदयपुर)

हाड़ी रानी की बावड़ी → टोडा रायसिंह टोंक

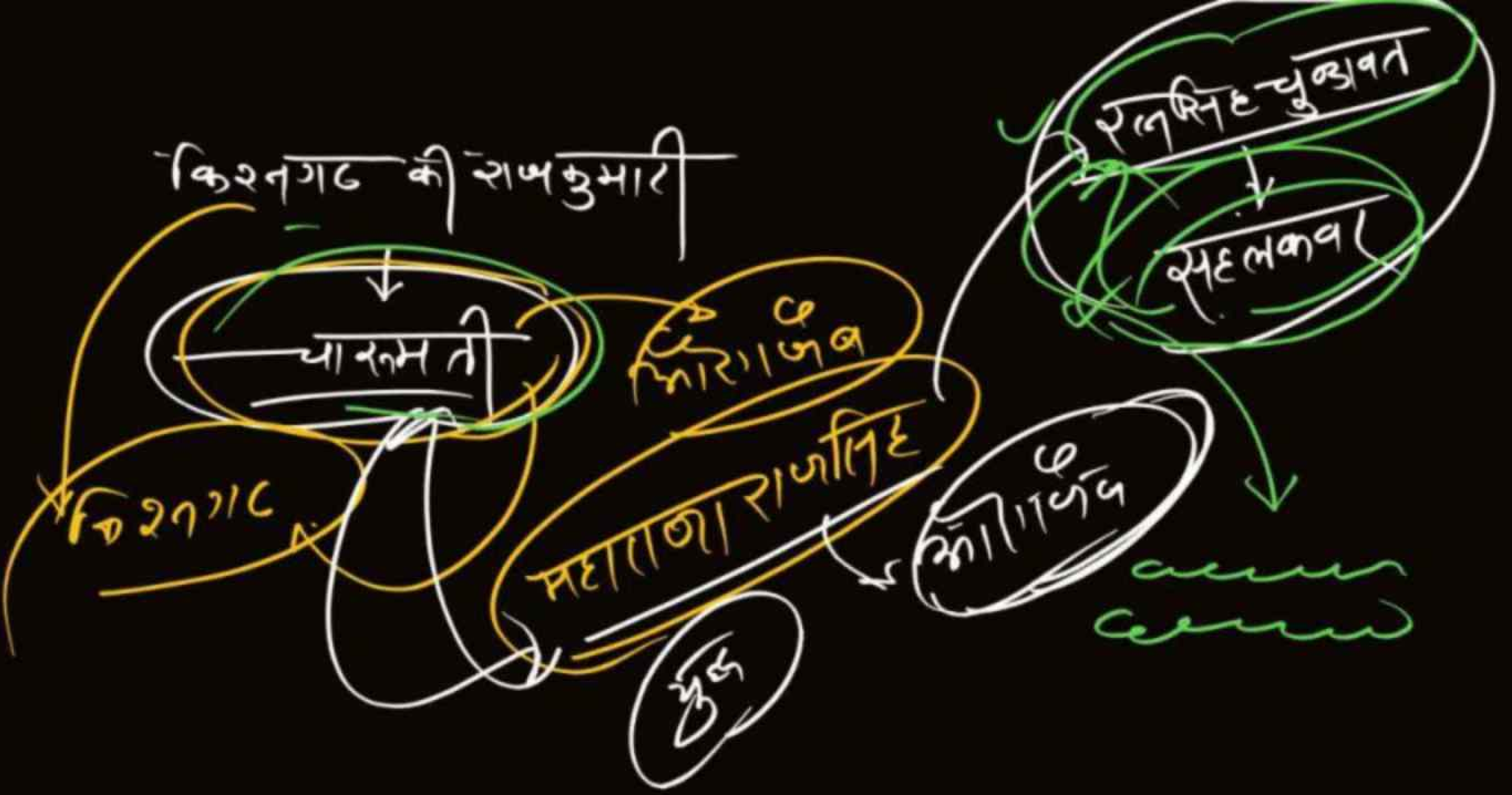
किशनगढ की राजकुमारी
चारुमती
किशनगढ
औरंगजेब
महाराणा राजसिंह
युद्ध
औरंगजेब
रतनसिंह चुण्डावत
सहलकंवर

→ नाथद्वारा चित्रकला शैली का स्वर्ण काल → महाराणा राजसिंह का काल

→ महाराणा राजसिंह मथुरा से भगवान कृष्ण की लाई गयी प्रतिमा का एक मंदिर सिहाड़ नाथद्वारा मे और दूसरा कांकरौली राजसमंद मे बनाया

→ महाराणा राजसिंह ने दशहरे के दिन पूजा करने के बाद टीका दौड़ करवायी जिसमे मुगलो के ठिकानो को लूटा जैसे → मालपुरा, मालवा, अजमेर

→ राजसिंह ने त्रिमुखा बावड़ी बनवायी
राजसिंह की मृत्यु | छतरी → कुंभलगढ दुर्ग मे

महाराणा जयसिंह :- 1680-1698

↳ मुगलों को जजिया कर न देकर जजिया कर के बदले

मांडल | पुर | बदनौर जागीर मुगलों को दे दी

जयसमन्द झील का निर्माण जयसिंह ने करवाया

- ढेबर झील
- ↳ रूठी रानी कमलावती का महल है।
- राजकुमार के महल है।
- नर्मदेश्वर मंदिर बना है।

→ अमर सिंह II :

↳ देबारी समझौता → 1707-8

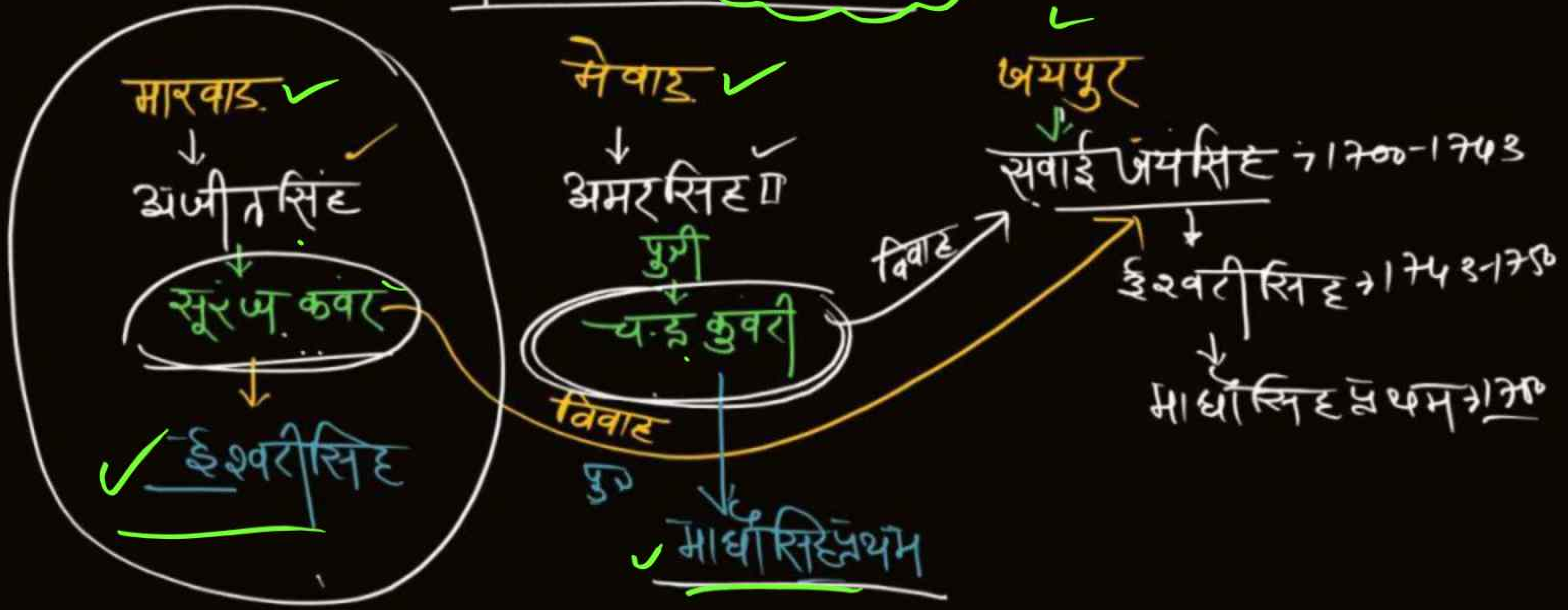

संग्राम सिंह II - 1710-1734

- उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी बनवायी
- सीसारमा गांव में वैधनाथ मंदिर का निर्माण करवाया
- वैधनाथ प्रशस्ति → 1719 → रूप भट्ट
- संग्राम सिंह II के समय पंचतंत्र पर चित्र बने
- संग्राम सिंह II के समय नुरुदीन नामक चित्रकार था
- इनके समय दुर्गादास राठौड़ भी मेवाड़ में थे
- संग्राम सिंह II के समय साहित्यकार करणी दान था
- हुरड़ा सम्मेलन के लिए आमेर शासक सवाई जयसिंह मेवाड़ आये
- 1734 में संग्राम सिंह II की मृत्यु

जगतसिंह II → 1734-1751

हुरड़ा सम्मेलन → भीलवाड़ा → 17-7-1734

किसने बुलाया → सवाई जयसिंह ने मराठों के प्रवेश को रोकने के लिए

✓ अध्यक्ष → जगत सिंह II (मेवाड़ शासक)

भाग लेने वाले शासक →

- ✓ किशनगढ़ → राज सिंह ✓
- ✓ करौली → गोपालपाल ✓
- मारवाड़ → अभयसिंह ✓
- कोटा → दुर्जनसाल ✓
- बूंदी → दलेल सिंह ✓
- बीकानेर → जोरावर सिंह ✓
- नागौर → बख्त सिंह ✓

हुरड़ा सम्मेलन सफल नही असफल रहा

जगत सिंह II

जगमंदिर का पुनः निर्माण

जगनिवास महल का निर्माण → पिछोला झील

मराठो से प्रथम चौथ वसूली कर लिया

1739 मे नादिरशाह का दिल्ली पर आक्रमण

जगत विलास ग्रंथ नेकराम ने लिखा।

जगदीश मंदिर का पुनः निर्माण करवाया

राणा भीम सिंह ई. 1807 - 1818

1810

कृष्णाकुमारी विवाद → 1807

मारवाड़
↓
राजा भीम सिंह (1803 मृत्यु)
↓
मान सिंह
↓
हार

पहले रिश्ता

मेवाड़
↓
राणा भीम सिंह
↓
कृष्णा कुमारी

बाद में विवाह तय

आमेर → जयपुर
↓
जगत सिंह II

जीत

साथ युद्ध में
BKNR → सूरत सिंह
टोंक → अमीर खाँ पिंडारी

गिंगोली | गिंगोली का युद्ध
1807

अमीर खाँ पिंडारी और अजीत सिंह चुण्डावत के सहयोग से राणा भीम सिंह कृष्णाकुमारी 1810 में जहर दिया

1818 में राणा भीम सिंह ने अंग्रेजों से संधि की

महाराणा सरदार सिंह → 1841 में MBC (मेवाड़ भील कॉर का गठन किया।
↳ मुख्यालय → खैरवाड़ा।
मुखिया → दौला काका | दौलत सिंह

✓ महाराणा स्वरूप सिंह : 1857 की क्रान्ति में अंग्रेजों का साथ देने वाला पहला शासक
↳ ✓ विजय स्तम्भ का पुनः निर्माण करवाया।
↳ ✓ लन्दन दौलत | स्वरूप शाही सिक्के चलाये
↳ ✓ इन्होंने सति प्रथा, समाधी प्रथा, डैहेज प्रथा को रोकने का प्रयास

मेवाड़ की अन्तिम सति → ऐंजा बाई (महाराणा स्वरूप सिंह की पासवान)

शम्भु सिंह : इनको ग्राण्ड कमाण्डर स्टार ऑफ इण्डिया की उपाधि दी गयी
↳ कविराजा श्यामलदास ने वीर विनोद ग्रन्थ इनके समय लिखना शुरू किया

महाराणा सज्जन सिंह : सज्जनगढ़ पैलेस बनवाया
↳ सज्जन कीर्ति सुधाकर (समाचारपत्र निकलवाया) → 1879
→ स्वामी दयानन्द सरस्वती का आगमन
→ सज्जन यन्त्रालय की स्थापना 1877
→ इजलास खास की स्थापना
→ 1881 में इनके समय जनगणना हुयी

लॉर्ड लिटन के दरबार में 1877 में भाग लिया

महाराणा फतेह सिंह

- चितौड़ में फतेह प्रकाश महल बनवाया।
- बिजौलीया किसान आन्दोलन इनके समय शुरू हुआ।
- 1903 में फतेह सिंह दिल्ली दरबार में जाने से

केसरी सिंह बारहठ की रचना ने रोका

- "चेतावनी रा चुंगट्या" → 13 सोरठे लिखे

महाराजा भूपाल सिंह राज० के एकीकरण के समय शासक थे

राज. के प्रमुख समाचार पत्र

राजस्थान समाचार पत्र :- ब्यावर से प्रकाशित
↳ सम्पादक : मुंशी समर्थनदान
↳ नारा → जयपुर जयपुर वासियों के लिए

राज. / राजपूताना / राजस्थानी भाषा → ब्यावर / अज.

राजस्थान केसरी :- 1920 में वर्धा से महाराष्ट्र में → विजयसिंह पथिक
↳ सम्पादन → सागरमल गोपा ने

नवीन राजस्थान :- 1921 → विजयसिंह पथिक के द्वारा
1923 → तरुण राजस्थान
↳ प्रकाशन → ब्यावर अजमेर

नवराजस्थान :- विधवा पुनर्विवाह के लिए निःशुल्क विज्ञापन प्रकाशन हुये

नया राजस्थान : सम्पादक - रामनारायण चौधरी

लोक राजस्थान :- इस प्रकाशन की जिम्मेवारी हरलाल ने ली थी

↳ वाल्टेयर का कथन :- हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत ना हो पाऊं, फिर भी आपके विचार प्रकट करने पर अधिकारों की रक्षा करूंगा।

→ प्रताप :- गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा कानपुर से प्रकाशित

↳ बिजौलिया किसान आन्दोलन के बारे में

→ मराठा पत्रिका : बाल गंगाधर तिलक द्वारा बिजौलिया किसान आन्दोलन

राजपूताना हेराल्ड : 1885 में हनुमान सिंह ने अजमेर से प्रकाशन किया
↳ लोक चेतना की धारा का पहला समाचार पत्र

→ अखण्ड भारत → 1938 मुम्बई से प्रकाशन — जयनारायण व्यास

→ आगी बाण → 1932 → राजस्थानी भाषा का पहला समाचार पत्र

→ राजपूताना गजट :- 1882 → मौलवी मुराद अली "बीमार"

→ राजस्थान विकली : ऋषिदत्त मेहता द्वारा

जयनारायण व्यास
↓
अंग्रेजी भाषा की पत्रिका
↓
"पीप"

राज की राजनैतिक संस्थाएं :

- वीर भारत सभा → 1910 → केसरी सिंह बारहठ, गोपाल सिंह खरवा द्वारा
- → विद्या प्रचारणी सभा → 1911 चित्तौड़गढ़ → हरिभाई किंकर ने (बिजौलीया मे) → पथिक
- → प्रताप सभा :- उदयपुर (1915) बलवन्त सिंह मेहता ने बनायी
- → राजपूताना मध्य भारत सभा 1918 → जमनालाल बजाज द्वारा दिल्ली मे
  - ↳ प्रधान कार्यालय कानपुर (राजस्थान अजमेर)
- → राजस्थान सेवा संघ : 1919 → वर्धा महाराष्ट्र विजयसिंह पथिक
- → प्रजा प्रतिनिधि सभा → 1918 → कोटा मे नयनुराम शर्मा

→ मारवाड़ सेवा संघ : 1920 → जोधपुर → अध्यक्ष → दुर्गाशंकर

→ मारवाड़ राज्य लोक परिषद → 1929

→ मारवाड़ लोक परिषद → 1938

→ मारवाड़ यूथ लीग → 1931

जोधपुर

→ आजाद मोर्चा → 1942 → हरिश्चन्द्र

→ बीकानेर प्रजा परिषद → 1942 → रघुवरदयाल गोयल

→ अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद → 1927 ई. मुम्बई मे (इसमे राज० के 7 सदस्य थे)

→ राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद → 1926 मे विजयसिंह पथिक ने की

→ जैन शिक्षा प्रचारक → 1905 → अर्जुन लाल सेठी ✓

→ होमरूल लीग → 1916 → दामोदर दास राठी द्वारा ब्यावर में

→ राष्ट्रीय महिला समिति :- 1930 जोधपुर में इन्दुमती गोयनका ने

→ मीणा क्षत्रिय सभा → 1933 → बंशीधर शर्मा

→ मारवाड़ क्रान्ति संघ → जोधपुर में लालचन्द

→ जैसलमेर राज्य प्रजा परिषद → 1939 शिव शंकर गोपा ने ✓